सारथी – जरूरतमंद कलाकारों के मददगार

इलैक्ट्रॉनिक प्रसार माध्यम – आज़ादी को एक चुनौती

बुनकर, दस्तकार, लोक कलाकार एवं शास्त्रीय संगीतकारों के साथ
मिलकर आज़ादी का जश्न

14 अगस्त 2003

को
दिल्ली की कच्ची बस्तियों के कलाकार
स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर
आप को सादर आमंत्रित करते हैं
कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो, नई दिल्ली–110008
प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 1:00 बजे तक

आईये कला का माहौल बनायें
कला की एक नई राह दिखे

दोस्तो,

14 अगस्त 1988 को स्व0 कमला देवी चटोपाध्याय जी ने हमारे बुनकरों द्वारा बनाया गया तिरंगा सभी हुनरमंद कलाकारों कि नई पीढ़ी को सोंपा था। उस दिन से आज तक हम सब बुनकर, दस्तकार, संगीतकार और लोक कलाकारों की सहकारी समितियॉं हर वर्ष एक खास विषय लेकर स्वतंत्रता दिवस मनाते आये हैं ।

इस वर्ष का विषय है.....

इलैक्ट्रॉनिक प्रसार माध्यम – आज़ादी को एक चुनौती

तकरीबन दस वर्ष पहले मैं एक पॉप संगीतकार से मिला जो लोक कला विधाओं को मच पर लाकर आगे बढ़ाना वाहता था।

एक ओर मै बॉलीवुड द्वारा लोक कला की बुरी नकल से तंग हूँ दूसरी ओर पॉप जगत की एक ऐसी हस्ती को जानता हूँ जिसने परम्परागत लोक शैली, भेष भूषा और नृत्य को चुरा कर खूब नाम कमाया। लाभ राशी का बटवारा तो दूर उसने लोक कला और कलाकारों को श्रेय तक नहीं दिया।

अपनी परम्परा को नयी और देशी दिशा देने के लिए एक रचनात्मक वार्तालाप जरूरी है। सही बातचीत और जोड़–तोड़ तो बराबरी के बीच ही हो सकती है। फिर भी नये रूप की खोज में मैं आगे बढ़ा और विश्वविद्यालय मे कार्यक्रम करने के लिये एक बड़ी मीडिया कम्पनी से आर्थिक सहयोग देने की भी हामी भरवा ली। हमने इस कार्यक्रम का नाम "जीयो" रखा– "जीयो " एक ऐसा शब्द जो आम ज़ुबान को लेकर,जीवन में विश्वास प्रकट करता है।

कार्यक्रम से पहले मैने उन विद्यार्थियों के लिए एक वर्कशाप करने का विचार किया जिन्हें भारतीय ताल व बोल में रूची नहीं थी, इस वर्कशाप में संगीत विशेषज्ञों, लोक कलाकारों और पॉप संगीतकारों को आमन्त्रित किया जाना था। बदकिस्मती से यह प्रोग्राम रद्द हो गया, क्योंकि विश्वविद्यालय ने इस प्रयोगात्मक कार्यक्रम को संभाल पाने मे असमर्थता ज़ाहिर की तथा प्रायोजक द्वारा आमन्त्रित बड़े प्रचार– प्रसार माध्यम से सभी घबरा रहे थे। आज समस्या यह नहीं है कि हम ऐसे कार्यक्रमों को ज़बरदस्ती कर के आगे बढ़ायें बल्कि आवश्यकता इस बात की है कि हम किस तरह एक साथ आगे बढ़ें।

बहुत से सवाल एक साथ उठते हैं– उड़ती चिड़िया कहां बैठेगी कौन जाने ?

– आज गानों की ज़रूरत बटन के दबाने या चैनल बदलने से पूरी हो जाती है। कमरे मे रखे टेलीविजन के डिब्बे ने परिवार व समाज की जगह ले ली है। लोगों में आपसी भगीदारी व गर्मजोशी कम ही देखने को मिलती है, लोग अकसर पाश्चात्य शैली की

नकल करने में लगे हैं। भारत का नये प्रसार माध्यम के प्रति झुकाव तथा इसके लचीलेपन के नशे मे स्थानीय व परम्परागत हुनर और मूल्यों का क्या होगा ?

– समय की कसौटी पर खरी उतरी प्रभावशाली प्रणाली, पारम्परिक ज्ञान, एक पीढ़ी से दूसरी पीढी खुद–ब–खुद उभरती आयी है। आज पहले से कई बार अधिक इन शैलियों को एक चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। बदली परिस्थिति और जजमानों की नयी मांगें..... शैली के पनपने का माहौल और उसका विस्तार..... शैली को प्रस्तुत करने में समय का आभाव और उसकी बनावट और पैकेजिंग..... उसको रूप देने के लिये आर्थिक सहायता और जजमानों में पहचान बढ़ाने की क्षमता..... यह सब कुछ ऐसे विषय हैं जिन्हें सुलझाने के लिए क्या हमारे लोक कलाकार अपने आप को प्रशिक्षित कर सकेंगे? इन चारों ओर की बदलती व्यवस्था को संभाल पाने की क्षमता कैसे पायेंगे?

– सफेद पोश प्रोडयूसर, कला संस्था, शहरी कलाकार आदि लोक कलाकारों के साथ खुलापन महसूस नहीं करते। कई पढ़े लिखे लोग, लोक कलाकारों की भाषा, भाव, जीवन शैली को नहीं समझते और इस कारण समायोजन, संचार, समाजिक बटवारे की समस्या पनपती है। इस कारण लोक कलाकारों के शहरी हमशकलों को उपयोग कर लोक कला को भद्दे ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। हमारी अमूल्य पारम्परिक कलायें इनसे प्रभावित होकर अपनी ही नकल की नकल बनती जा रही है।

– सन 1982 मे मैने आपको एक घटना का वर्णन दिया था जिसे मै आज फिर याद करने को मजबूर हूँ। एक बार देहात के दौरे में एक कला मण्डली दिखी, एक सुन्दर स्त्री सात अलग–अलग चालों में नृत्य पेश कर रही थी। एक स्वाभिमानी मज़दूर लड़की जो राजा का प्रेम प्रस्ताव भी ठुकरा सकती है। लोग उसकी हर अदा पर तालियां बजा रहे थे। यह दुनिया की सबसे सुन्दर लड़की एक पैंसठ साल का बुजुर्ग कलाकार था, बिना मेकअप के, चेहरे पर सिर्फ चूने का लेप।

10 साल बाद वही कलाकार विलायत में अपनी कला पेश करते हुए दिखा। अब वह लड़की नहीं बल्कि एक सुन्दर रूप की भद्दी नकल लग रहा था। कारण ढली उम्र नहीं, उसका मेकअप और उसकी भावना थी। पहले वह अपने अन्दर की औरत को कला सहित बाहर लाता था अब वह साज सज्जा–वेषभूषा के ज़रिये औरत दिखना चाहता था। उसें यह बदलाव कब आया ? तब जब उसने अपनी कला को टेलीवीज़न पर देखा। उसकी भूमिका मेकअप से लदी शहर की एक लडकी अदा कर रही थी। उसी क्षण से उसको अपनी कला में कमी लगी। वह अपने हुनर के प्रति भयभीत हो गया। अपनी ही नकल से क्यों डर गया ? जो सम्मान अपनी कला के प्रति पहले उसके अंतर्मन में था अब क्यों नहीं रहा ?

यही डर गरीब लोक कलाकारों में अक्सर देखने को मिलता है। जिसकी वजह समाज में हो रहे बदलाव की भी है। वह छोटी–छोटी नकली चीज़ों की मिलावट कर असली कला भूल जाता है, परिवर्तन के नाम पर मिलावट कर लेता है। शायद वह यह नहीं जानता कला में साज – सज्जा व दिखावे से नहीं, भावनाओं और सृजनात्मक सोच से परिवर्तन आता है।

आज पूरे विश्व के लिए सामूहिक संस्कृति बनाने की बड़े ज़ोर–शोर से कोशिश हो रही है, वहीं दूसरी तरफ कई लोग अपनी जड़ो, सभ्यता की तरफ बढ़ रहे हैं। आत्मारहित, भावरहित सामूहिक गलोवलाईज़ेशन का विरोध कर रहे हैं। सटेलाईट संचार माध्यम आज इस सामूहिक संस्कृति का सबसे बड़ा स्वरूप है। स्थानीय लोक कला व देशी कलाकार आज के दौर में इतना सशक्त साथी कहाँ ढुंढेंगे ?

तो आइये इस वर्ष हम एक छोटे से हस्तक्षेप का प्रयास करें.....उदाहरण के लिए कुछ लोक कलाकार और कुछ आज के पॉप कलाकार को लेकर। मानता हूँ की बैल को सींग से पकड़ने का प्रयास है, एक ऐसा माध्यम जिसके बारे में हमें कम मालूम है। संभव है इस कम समय में हम जो पॉप कलाकार लायें वो एक नया उत्तर, सामूहिक संस्कृति को समझने की नयी सोच हमें नही दे पाये..... पर ऐसी वार्तालाप आवश्यक है और काम शुरू हो चुका है।

हमें नये का सृजन प्रारम्भ करने के दौरान इस बात से सचेत रहने की जरूरत है कि पॉप कलाकारों की प्रस्तुति में मंच पर कहीं लोक कलाकार एक मात्र सजावटी वस्तु तो नहीं बन रहा है? हमें आशा है कि विभिन्न कलाकार, अपने विविध प्रकार के सुर, एवं वाद्यों से एक नयी भाषा की रचना करेंगे..... सुर, संगीत के नये क्षितिज का निर्माण होगा।

ऐसी भाषा जिससे एक बाउल जोगी कलाकार के संगीत और काव्य की संगत एक पॉप गायक अपने सुर में उचित अनुवाद के साथ कर सकेगा। क्या एक पॉप तालवादक एक मंगनियार की रहस्यमयी आवाज और कोमल रेगिस्तान की ताल को छू पायेंगा ? कैसी होगी नये वायलिन और पुरानी दर्द भरी भोपा की आवाज़ की जुगलबंदी ? क्या हो पायेगा काव्य निर्माण, जैज़ सेक्सॉफोन वादक और उत्तेजक कालबेलिया नृत्यांगना के साथ आने से, कैसा होगा मिलन "ताल वाद्य कचहरी" और "रैप" का ?

इन प्रश्नों का जवाब शब्दों तथा स्याही के उपयोग से नहीं मिलेगा। आज़ादी के 56वें वर्षगांठ के उपलक्ष्य में, आईये हम सब संगठित हों और प्रयास करें "परम्परा" और "आधुनिक" के मिलन का।

आइये और साथ लाइये अपने वाद्य, सुर और उन्मुक्त आत्मा को । आशा है आपसे मुलाकात होगी 14 अगस्त को, आज़ादी की चुनौती का उत्सव मनाने हेतु।

जय हिन्द

राजीव सेठी

सारथी – जरूरतमंद कलाकारों के मददगार

निमंत्रण

आप आमंत्रित हैं स्वतन्त्रता दिवस समारोह मनाने के लिए पारम्परिक कला के रहवास की एक बस्ती में। जादू की मंत्र मुग्ध विधाओं पर जमूरे के डायलौग, इशारों पर नाचती कठपुतली, दूसरी तरफ नाच, गाना और देखेंगे कि घर न होने के बावजूद यहाँ के लोग किस उत्साह और साहस से सदियों पुरानी सांस्कृतिक धरोहर को अपने में समेटे हुए हैं।

कार्यक्रम :

14अगस्त 2003

10: 00 बजे प्रातः---------- झंडा रोहण, राष्ट्रगान

10: 05 बजे प्रातः---------- अतिथि भाषण

10: 15 बजे प्रातः---------- सांस्कृतिक कार्यक्रम

11: 00 बजे प्रातः---------- बस्ती में सामुदायिक कार्यक्रम ।

कार्यक्रम स्थल –: भूले बिसरे कलाकार वर्कशॉप, कठपुतली कालोनी, शादीपुर डिपो,नई दिल्ली–110008
फोन न0 : 2570 61 89

कार्यक्रम सहयोगी –: भूले बिसरे कलाकार कोआपरेटिव सोसाईटी।

शुभकामनायें

विनीत

(राजीव सेठी)

सारथी– नेहरु कला कुन्ज, फलेट न० 4, शंकर मार्किट, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली –110001
फोन: 23411107, 23413744 फेक्स: 23414065 ई–मेल: sarthi@nda.vsnl.net.in